The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 3 | March 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

कला समीक्षा के अंतर्गत अस्तित्ववादी एव पदार्थवादी विचारधाराः एक अध्ययन

प्रतिभा सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, मार्डन कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज़, गाजियाबाद
E-Mail: pratibharajput2722@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords :
अस्तित्ववादी विचारक, मनोभौतिक दूरी, सौन्दर्यशास्त्रीय समानुभूति

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध सारांश अध्ययन आधुनिक युग के अस्तित्ववादी विचारको थियोडोर लिप्स, (Theodor Lipps), एडवर्ड बुलो (Edward Bullough) एवं एब्राहम मास्लो (Abraham Maslow) की विचारधाराओं को कला समीक्षा के अंर्तगत अध्ययन करता है। अस्तित्ववादी चिंतको की प्रमुख विशेषता यह रही कि उन्होने दार्शनिक विचारो के साथ–साथ साहित्यक विचारो को भी प्रस्तुत किया और साहित्य का आधार लेते हुए मानव मन को समझने की चेष्टा की। यह अध्ययन अस्तित्ववादी एंव पदार्थवादी विचारधारा के अंर्तगत मनोभौतिक दूरी तथा सौन्दर्यशास्त्रीय समानुभूति का अध्ययन दृश्यकला के परिप्रेक्ष्य में करता है और वर्णित करता है कि मनुष्य में जागरुकता की अधिकता या पराकाष्ठा होने पर मनुष्य अपनी सीमाओं से ऊपर उठ जाता है और पराकाष्ठा पर पहुंची हुई जानकारी स्व को समाप्त कर देती है।

प्रस्तावना

आधुनिक कला में हुए प्रयोगो में कला मर्मज्ञो के सामने नई चुनौतिया प्रस्तुत हुई और उन परिवर्तनों को कला मर्मज्ञो के साथ–साथ मनोवैज्ञानिको ने भी गहन अध्ययन किया तथा कला समीक्षा के विविध पक्षो की विचारधाराएँ एंव विविध पहलू प्रस्तुत किये जिनमे मनोदैहिकी विचारधारा, संज्ञानात्मक विचारधारा, मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा आदि प्रमुख है। परन्तु कुछ विद्वानो का मानना रहा कि ये विचारधाराएँ कला समीक्षा के सभी पक्षो को प्रस्तुत नही कर पाती है। अतः कला समीक्षा के इन पक्षो के साथ वर्तमान काल में एक अन्य प्रकार की कला समीक्षा परम्परा भी विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की गई। आधुनिक युग के कुछ विद्वानो जैसे थियोडोर लिप्स, एडवर्ड बुलो तथा अब्राहम मास्लो ने मानव अस्तित्व को आधार बनाते हुए अस्तित्ववादी व पदार्थवादी विचारधारा की प्रस्तुत किया और यह माना कि अस्तित्ववादी विचारधारा में पारम्परिक समस्याओ और चिंतन परम्पराओ से हटकर मानव अस्तित्व की अतिशय गंभीर समस्याओ को नवीन परिप्रेक्ष्य में समझने की चेष्टा की जाती है। इन विचारधाराओ का वर्णन इस प्रकार है।

थियोडोर लिप्स की सौन्दर्यशास्त्रीय समानुभूति की विचारधारा

(Theory of Aesthetic Empathy of Theodor Lipps)

सभी मनुष्यों में मन के द्वारा किसी भाव या वस्तु या विचार को अनुभव करने की क्षमता होती है एंव यदि कला के परिप्रेक्ष्य में हम सौन्दर्यानुभूति की चर्चा करते है तो सौन्दर्यानुभूति से तात्पर्य किसी भी सुन्दर वस्तु या किसी कला में निहित सौन्दर्य को अनुभव करना होता है। यह अनुभूति चित्र या मन में स्थित होती है और भावानुभूति की संतुष्टि होने पर आनन्द की प्राप्ति हो जाती है। जब मनुष्य की भावानुभूति अन्य मनुष्यो के भावो को अनुभव कर पाती है तो उसे समानुभूति का नाम दिया जाता है।

इस प्रकार सौन्दयनिभूति के समय वस्तु एंव कलाकार और कलाकार एंव कृति और दर्शक तथा कृति के बीच का भेद समाप्त हो जाता है।

समानुभूति (Empathy) जर्मन शब्द 'Einfunlung' का अंग्रेजी रुपांतर है, जिसका अर्थ होता है ''गहराई' तक अनुभव करना, कलाकार जब किसी वस्तु, पदार्थ, मानव, प्रकृति किसी का भी चित्रण करता है और उस वस्तु के अनुसार स्वंय को भी अनुभव करे या स्वंय में उस वस्तु को अनुभव करे। उदाहरण के लिए चीनी कलाकारों द्वारा सृजित चित्र 'Bamboo' चीनी कलाकार कहते है कि जब मैं 'Bamboo' का चित्र बनाता हूँ तो मुझे नही पता होता कि मैं कौन हूँ या मेरा अस्तित्व क्या है ? चित्र बनाते समय मैं वहीं वस्तु बन जाता हूँ जिसे मैं चित्रित कर रहा हूँ । उसी प्रकार जब दर्शक 'Bamboo' के चित्र को देखे तो दर्शक कलाकार की उस सवेंदनशीलता तथा उस गति को अनुभव करे जिस भाव को अनुभव करके कलाकार ने यह चित्र बनाया है।

चित्र 1

चीनी कलाकार द्वारा निर्मित कृति 'Bamboo'

थियोडोर लिप्स ने सौन्दर्यशास्त्रीय समानुभूति को एक विशेष प्रकार की भावना माना है जो विशुद्ध सौन्दर्यशास्त्रीय चितंन मनन के दौरान जन्म लेती है। इस प्रक्रिया में दर्शक का वस्तु पर ध्यान केन्द्रित हो जाता है और समानुभूति की भावना उसी क्षण सहज हो जाती है। कलाकार जब वस्तु से स्वंय को जोड लेता है तो वे दोनो एक रूप हो जाते है तब दोनो का भेद समाप्त हो जाता है और वह एक ऐसी स्थिति होती है जो कलाकृति का रूप धारण कर लेती है। उस कलाकृति को देखकर जब दर्शक के मन में भी आत्मसचंरित रूप से भावनाएँ उदित होती है उसे ही थियोडोर लिप्स ने सौन्दर्यशास्त्रीय समानुभूति माना है।

एडवर्ड बुलो की मानसिक अंतराल की विचारधारा

(Theory of Psychical distance of Edward Bullough)

'सौन्दर्यात्मक चेतना' जिसे बुलो ने अपनी विचारधारा में मानसिक अंतराल' का नाम दिया है, मनोवैज्ञानिक सौन्दर्यशास्त्र के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है। मानसिक अंतराल के अंतर्गत कलाकार और चित्र के मध्य के अंतराल का अध्ययन किया जाता है कि किस प्रकार चित्रकार अपना स्व समाप्त करके, चित्र से मानसिक अंतराल स्थापित करके ही चित्र रचना कर सकता है।

सौन्दर्यात्मक चेतना से बुलो का मानना है कि किसी कि चित्र को देखकर मुझे वह चित्र अच्छा लगा और मैं उसके चितंन में डूब गया। उस समय चित्र के आकारो ने मुझे वह कहा जो शायद मैं सुनना चाहता था और वह दिखाया जो मैं देखना चाहता था। इसका अर्थ है कि मैं चित्र को सौन्दर्यशास्त्रीय रूप में अनुभव कर रहा हूँ। इस प्रकार सौन्दर्यात्मक चेतना दूसरी प्रकार की चेतना से अलग हो जाती है और इसे ही बुलो ने मानसिक अंतराल कहा है। बुलो ने 1907 में लिओन कॉगनेट (Leon Cogniet) द्वारा बनाये गये एक चित्र का उदाहरण दिया है, जिसमें उसने तिन्तोरेतो को

उसकी मृत पुत्री के चेहरे का अध्ययन करते हुए दिखाया है। मानो उसने अपने आप को सत्य की भयावकता से अलग कर रखा हो। तिन्तोरेत्तो का व्यवहार आत्मकेन्द्रित और हृदयहीन प्रतीत होता है किन्तु बुलो ने इस दृश्य में कलाकार को चितंक के रूप में देखा और इस दुख के समय रोने की अपेक्षा चित्र बनाने में खोया है और इसे बहुत महान माना तथा इस मनोवृति को ही मानसिक अंतराल की संज्ञा दी।

चित्र 2

लिओन कॉगनेट द्वारा निर्मित कृति **'Tintoreto painting his dead daughter'**

अब्राहम मास्लों की विचारधारा

(Abraham Maslow's Theory)

अब्राहम मास्लो ने 1954 में 'आत्मोकर्ष' के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया। यह विचारधारा मानवतावादी और अस्तित्ववादी विचारधारा के प्रमुख सिद्धान्तो को प्रस्तुत

करती है। उसने 1954 में बताया कि मानव अभिप्रेरको का जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। इस संर्दभ में इनकी व्याख्या एक स्तर के रूप में की जो उसकी एक अनुक्रम पद्धति मा

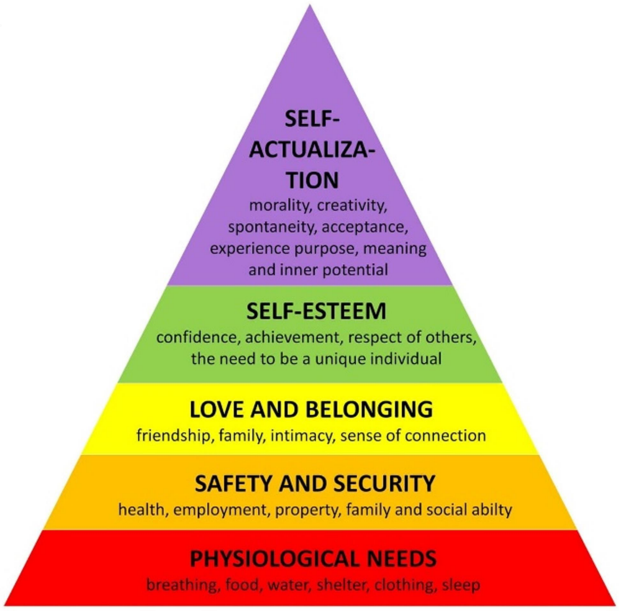

चित्र 3

अब्राहम मास्लो का अनुक्रम सिद्धान्त

(i) **दैहिक आवश्यकता :–** दैहिक आवश्यकताओ में उसने भूख, प्यास, ऑक्सीजन आदि आती है। सबसे पहले मनुष्य अपनी शारीरिक आवश्यकताओं के बारे में ही सोचता है और उनकी संतुष्टि चाहता है।

(ii) **सुरक्षा की आवश्यकता :–** जब व्यक्ति की शारीरिक आवश्यकता दूर हो जाती है तो उसके सामने महत्वपूर्ण आवश्यकता सुरक्षा की होती है। इसमें हमे हमारे भय और चिंताओ से सुरक्षा की आवश्यकता होती है।

(iii) **सदस्य होने या स्नेह पाने की आवश्यकता :–** यह तीसरी प्रमुख आवश्यकता है, इस आवश्यकता में मनुष्य व्यक्ति, परिवार, धर्म, आदि के साथ तादात्मय स्थापित करता है।

(iv) **सम्मान की भावश्यकता :–** इस आवश्यकता में प्रतिष्ठा, आत्मा सम्मान, उपलब्धि, सफलता आदि सम्मिलत होते हैं।

(v) **आत्मसिद्धि की आवश्यकता :–** आत्मसिद्धि सबसे ऊपरी स्तर की आवश्यकता है जहाँ पर सभी लोग नही पहुँच पाते हैं। आत्मसिद्धि से तात्पर्य अपने अंदर छुपी क्षमताओं की पहचान करना है।

मास्लो के अनुक्रम में मनुष्य शारीरिक आवश्यकताओं से ऊपर उठते हुए आत्मसिद्धि तक पहुंचता है जहाँ शारीरिक आवश्यकताओ व अन्य सम्मान व स्नेह आदि का कोई महत्व नही रहता है। उसी प्रकार कला आनंद या सौन्दर्य आनन्द लेते समय मनुष्य विषय, रूप, रंग, रेखा, तान, पोत से ऊपर उठकर विशुद्ध आनंद को प्राप्त करता है। उदाहरण के लिए मार्क रोथोको का चित्र 'Red, Brown and Blade' को देखकर दर्शक की मानसिक अवस्था ध्यान केन्द्रित हो जाती है, फिर उसे उस चित्र के औपचारिक तत्वों का कोई महत्व नहीं होता।

चित्र 4

मार्क रोथोको द्वारा निर्मित कृति 'Red, Brown and Black'

कला और अस्तित्ववाद की विचारधारा में मास्लो के सिद्धान्त का विशेष महत्व है। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति अपने जीवन के अनुभवो से सीखता हुआ आगे बढ़ता है और केवल यही विचारधारा मनुष्य के सौन्दर्यात्मक अनुभव को आध्यात्मिक स्तर तक पहुँचाती है।

निष्कर्ष

मानव एक जटिल प्राणी है और उसकी जटिलता उसके मन के कारण है। अतः मन को समझना ही मनुष्य को समझना है। थियोडोर लिप्स की विचारधारा सौन्दर्यशास्त्रीय समानुभूति, एर्डवर्ड बुलो की मानसिक अंतराल तथा मास्लो की अनुक्रम पद्धति सभी विचारधाराओं ने शारीरिक आवश्यकताओ से लेकर आत्मोकर्ष तक की आवश्यकताओं की व्याख्या की है तथा कला समीक्षा के अंतर्गत कला के सौन्दर्य का दार्शनिक और साहित्यक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया। सौन्दर्य वस्तुतः एक मानसिक अनुभूति या प्रतीति है और इसका भाव हर व्यक्ति में प्रतिक्षण विद्यमान रहता है। अस्तित्ववादी विचारको ने दृश्यकला को उस आर्दश रूप में देखा, जिसके लिए कालिदास ने लिखा है –

यदुच्यते पार्वति पापवर्तृये।
न रूप नित्यव्यभिचार तदचः।।

अर्थात कला मन की वृत्तियो को कलुष से खींचकर चैतन्य और आनन्दमय स्थिति की ओर ले जाने के लिए है। आज औद्योगिक क्रान्ति के युग में मानव जीवन की भागद ौड का मानव मस्तिष्क व मानव मन पर बहुत प्रभाव पड़ा है व कला भी इससे अछूती नही है। इस परिप्रेक्ष्य में अस्तित्ववादी विचारधारा और कला के संबध का अध्ययन वर्तमान दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योकि केवल वह विचारधारा ही मानव को

उसकी वर्तमान एंव भावी समस्याओं से ऊपर उठाकर आत्मोत्कर्ष की ओर ले जाती है।

संदर्भ

1. कुर्त्ज, ब्रुस डी. 1987. विजुअल इमेजिनेशन एव इंट्रोडक्शन टू आर्ट. एगंलवुड क्लिप्स प्रेंटिस हॉल·
2. क्षोत्रिय, शुकदेव. 2001· कला विचार. चित्रायन प्रकाशन, उत्तरपदेश·
3. गौतम, आर.बी. 1988· कला का मनोविज्ञान· श्याम प्रकाशन, जयपुर·
4. प्रसाद, देवी. 1994· शिक्षा का वाहन कला· नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया·
5. वात्स्यायन. 1992·. व्यवहारिक मनोविज्ञान. केदारनाथ रामनाथ प्रकाशन, मेरठ·
6. कलिंगवुड, आर. जी. 1967· कला के सिद्धान्त. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी·
7. जमुआर, कृष्ण कुमार. 1973· मनोविज्ञान की रूपरेखा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना·
8. वीरेश्वर, प्रकाश. शर्मा, नुपुर· 2007· कला दर्शन. कृष्णा प्रकाशन, मेरठ